Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-1 (Jan.-June) 2025 : Page No.-92-105

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-1 (Jan.-June) 2025
Page No- 92-105

©2025 Shodhaamrit (Online)
www.shodhaamrit.gyanvividha.com

संतोष कुमार झा
(शोध गवेषक)
सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग
फारबिसगंज कॉलेज, फरबिसगंज.

डॉ. राधा कुमारी
(शोध निर्देशक)
मैथिली विभागाध्यक्ष,
पूर्णियाँ महिला महाविद्यालय,पूर्णियाँ.

Corresponding Author :
संतोष कुमार झा
सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग
फारबिसगंज कॉलेज, फरबिसगंज.

डॉ. कमलकांत झाक 'व्यक्तित्वक पृष्ठभूमि'

साहित्य अकादमी सँ सम्मानित मैथिली, हिन्दीक प्रसिद्ध साहित्यकार अनेको संस्थाक प्रधान आ दर्जनों पोथीक रचनाकार डॉ. कमलकान्त झाक जन्म 29 मार्च 1943 ई. मे मधुबनी जिलान्तर्गत कलुआहीक गाम हरिपुर डीह टोल मे भेल छलनि। हिनक माताश्रीक नाम तारा देवी आ पिताश्रीक नाम वीरेश्वर झा छलनि। कमल बाबू के दू बेटा पहिल रमेश चन्द्र झा आ दोसर रत्नेश चन्द्र झा आ तेसर संतानक रुप मे अनिता कुमारी छथि। अनीताक विवाह रमेश कुमार झा बिहार प्रशासनिक सेवा मे नियुक्त पदाधिकारी सँ भेल छैन्हि। कमल बाबूक एकटा बहीन छलथिन। जकर नाम भुखनी देवी छल। कमलजीक जन्मपत्री नहि रहलाक कारणे विद्यालय मे नामांकनक समय प्रधानाध्यापक अंदाज सँ 29 मार्च 1943 ई. लिख देलनि। असल मे हिनक जन्म 7 अप्रील 1942 ई. मे भेल छलनि। जन्म लेलाक किछुए दिनक बाद हिनक माताश्रीक निधन 1945ई. मे भय गेलनि। माताश्रीक निधनक समय ओ अबोध बच्चा छलाह। मुदा मूंडन संस्कार भय गेल रहनि।

हिनका अपन मायक मुँह स्मरण नहि छलनि, किन्तु मायक मृत्युक पूर्वक किछु दृश्य स्मृतिपटल पर अखनो नाँचि रहल छलनि। हिनक उक्ति - हमर मूड़न भेल छल दक्षिणबरिया घरमे कर्णवेध भऽ रहल छल ; मायक कोरामे बैसल रही आ सोनार कान छेदैतरहय। हाथमे गूड़क ढेप दऽ देल गेल छल, तथापि बड़ कानल रही। कानबो करी आ गूड़क ढेप सेहो चाटि लेल करी। प्राय:लोकोक्ति बनलैक- "यैह गूड़ खयने, कान छेदौने"।

हिनक वृद्धप्रपितामह (हरिपुर डीह टोल) बेलौंजे, सतलखा मूलक भारद्वाज गोत्रीय भगवानदत्त झा छलाह, जिनका कोनो पांजि सेहो छलनि। तनिक बालक (हिनक प्रपितामह) पं. शंकरदत्त झा प्रसिद्ध ज्योतिषी छलाह, जिनका चारि बालक भेलथिन। वंश हिनके पितामह ज्योतिषी पं. जगदीश झा सँ चललनि। आन भाइकें बेटा नहि छलनि।

हिनकर पितामह पं. जगदीश झा अपन समयक सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य रहथि। दूर- दूर सँ लोक हुनकासँ फलित ओ गणित पढ़बाक हेतु आबैत रहनि। गामक बूढ़- पुरान लोकसभ सँ उक्त बात सभक जानकारी भेलन्हि। जखन माध्यमिक परीक्षा पास भऽ रामकृष्ण महाविद्यालयमे नामांकित करेलन्हि तँ मधुबनी डयौढ़ीक बाबू साहब आओर मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर' सँ सेहो अपन पितामहक विद्वताक विषयमे अनेक जानकारी प्राप्त भेलन्हि। ई हुनका देखने नहि छलथिन, कारण हिनक जन्म सँ पाँच वर्ष पूर्वहि हुनक देहान्त भऽ गेल रहनि। रमाकरजीक टीपनि वैह बनौने रहथिन तथा हुनक ग्रह-नक्षत्र गणना संबंधी विवाद मे विजयी-भेलाक कारण एकवेर प्रर्याप्त पुरस्कार सेहो भेटल रहनि। ओ ततेकप्रतिभाशाली ज्योतिषी छलाह जे माल-जालक प्रसवक सेहो सटीक भविष्यवाणी करथि। हुनका भरि गामक लोक पढ़ुआ काका कहैत रहनि। पैतृक संपत्ति तँ प्रर्याप्त रहबे करनि, संगहि अपन योग्यताक बल पर सेहो सम्पति बढ़ा लेने रहथि। प्राय: पचास बीघा जमीनक मालिक रहथि। हुनका चारि बालक भेलथिन - 1. नागेश्वर झा 2. नाकेश्वर झा 3. वीरेश्वर झा, मल्हूबाबू 4. गोपाल झा। हिनक पिता के भरि गामक लोक मल्हूदोस्त कहैत रहनि। हिनक बड़का काकाकें लोक बौआ कहैत छलन्हि। हिनक बड़का काकाकें पढ़ाई छोड़ि खेती गृहस्थी संम्हारऽ पड़लन्हि, कारण पिता ज्योतिषीजी बेसी काल मधुबनी रहैत छलाह।

ओना कलुआही गाँव मे अनेकानेक टोल छैक महान विद्वान साहित्य अकादमी पुरस्कार सँ पुरस्कृत उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' जीक जन्म भेल छलन्हि। कलुआही मे चौदह टोल छैक। कोनो बटोही कें टोलक नाम मन नहि रहैन्ह तँ ओ भरि दिन बौआइते रहताह। एकटा बटोही लिखै छथि ढंगा हरिपुर चौदह टोल। बाट बटोही करै किलोल। हिनक मायक मृत्युक बाद घर अस्त-व्यस्त भऽ गेल रहनि। जतेक हिनक मायकें लगानी -भिड़ानी छलैक से बाबूजीसँ गुप्त रहलाक कारण सबटा डूबि गेलनि। हिनक बाबूजी तकर खोजों -पुछारि नहि कयलन्हि। हिनक मायक श्राद्धक बाद जखन ओ कलकत्ता जाय लगलाह तँ हिनक दुनू भाइक भविष्यकें ध्यानमे राखि भैयाकें मौसी लग धमियांपट्टी कमलजीके नानी लग (लोहा) पहुचां देबाक निर्णय कयलनि। गामक सुन्नर काका, भैयाकें धमियांपट्टी पहुचां देलथिन। कमलजीके घरक एकटा वहिया बहुरी चौधरीक विवाह लोहे छलैक, तँ एकदिन ओकरहि कनियां (बुधनीक) संग हिनका लोहा पठा देल गेलनि। हिनका स्मरण छनि। बुधनी ओहि समयमे, नवकनिये छलिह। तथापि हिनका कोरामे उठौलक आ मातृक लोहा पहुचां देलकन्हि। हिनका देखितहि नानी अपन बेटी लेल विलाप करऽ लगलीह। हिनका अपन छातीमे साटि लेलनि।बुझि पड़ल जैना मायक स्नेह पुनः पलटि आयल। नानीक असीम स्नेह हिनका भेटऽ लागल,तें किछु दिन खेलाइते बीति गेल। दोस्त (बीलट) काशीनाथ, मुरली, श्याम, सत्यनारायण, नारायण, जीबछ, मण्टू आदि अनेक संगतुरिया दोस्त संग रितिया गेलाह। नानी एवं बङका मामासँ ज्ञात भेल जे हमर वृद्धप्रमातामह पं माधव झा,ककरौल निवासी बलियासय जमसम मूलक छलाह। हुनक विवाह लोहाक जमीनदार बच्चा चौधरीक बहिनसँ भेल छलनि तथा हुनका सासुरहिमे बसा देल गेलनि। हुनक बालक कमलजीक (प्रमातामह) राघव झा छलथिन, जिनका अपन मामी शशिमणि चौधराइनसँ नहि पटैत छलनि। तकरो कथा नानी हिनका कहने रहथिन। भोजनकाल में एकहि दिन मामाके अनुपस्थितिमे मामी असम्मान प्रदर्शन कऽ देने रहथिन,जाहि कारण ईहो हुनका सम्मान करब छोङि देने रहथि। किछु दिनक बाद उक्त जमीन्दार बच्चा चौधरीक देहान्त भऽ गेलनि। मसोमात शशिमणि चौधराइन स्वयं राजकाज देखबाक हेतु विवश भऽ गेलीहि कारण ओ निः संतान रहथि। हुनकासँ अनेक लोक आर्थिक लाभ उठौलक, किन्तु अपने भगिनमान स्वभिमानक रक्षार्थ कोनो लाभ नहि उठा सकलाह। स्व. राघव झाकें दूं पुत्र भैलथिन - यादव झा ओ केशव झा स्व. यादव झाकें दूनू पक्षमे एक-एक पुत्र भेलथिन। हिनक मातामह स्व. केशव झा

(लोहा) रहथि, जे शारीरिक सौष्ठवसँ परिपूर्ण बलिष्ठ लोक रहथि। ओहि समयमे नेनासँ युवावस्थाधरि अधिकांश लोक कुश्ती खेलाइत छलाह। नानाजीकेँ मसोमात साहिबा अपन पौत्र जकां मानैत छलथिन, तथापि नानाजी स्वाभिमान रक्षार्थ हुनकासँ कहियो सम्पतिक याचना नहि कयलथिन। हिनक नानाजी (स्व. केशव झा) क पहिल विवाह दामोदरपुर वैह करबौलथिन, जाहि मे ओ प्रर्याप्त खर्च करने रहथिन। लोहासँ दामोदरपुर धरि दही, केरा आ मिठाई मुँगबा सैकड़ो भारक छोर लागि गेल रहय। ओहि समय विवाहक सम्पूर्ण खर्च वरहि पक्ष केँ करऽ पड़ैत। मोसमात साहिबा हिनक नानी गोदावरी देवीकेँ अपन पुतोहु जकां मानैत रहथिन, किन्तु नानी ततेक सोझमतिया छलीह जे कहियो कोनो लाभ नहि उठा सकलीहि। मासोमात स्वयं हुनका लाभान्वित करितथिन, किन्तु कोनहु षड़यंत्रक कारण हुनक मृत्युए भऽ गेलनि। हुनक एक बहिनि हिनकहि गाम (हरिपुर डीहटोल) मे बसैत रहथिन। अपन बहिनपुत रघुनाथ मिश्रकेँ मोसमात अपनहि संग राखऽ लागलि रहथिन। मास करबाक हेतु जनकपुरधाम गेलि रहथि। किछु दिनक बाद हुनक रहस्यमय ढंगसँ ओतहि देहान्त भऽ गेलनि। उक्त सम्पूर्ण कथा हिनक नानी कमलजीकेँ कहने रहथिन।

माताश्रीक निधनक पश्चात् हिनक पिता स्वर्गीय श्री वीरेश्वर झा प्रथम पुत्र इन्द्र कान्त झा केँ धमियाँपट्टी आ दोसर पुत्र कमलकांत झाजीकेँ मातृक (लोहा) मे पढ़बाक हेतु जखन आनल गेल रहनि। आ अपने वीरेश्वर झा धनक उपार्जन हेतु कलकत्ता चलि गेलाह। जाहि धनसँ परिवारक भरण-पोषण होइत छलन्हि। ओहि समयमे मिथिलाक लोक जीविकोपार्जन हेतु अधिकांशतः कलकत्ते जाइत छल। कमलजीकेँ एक साल खेलहि - धूप मे बीत गेल रहन्हि। तकर बाद मामा (ब्रह्मदेव झा) भट्ठा धरौलनि, तिरहुता नहि देवनागरी लिपि मे। ओ प्राय: 1946 ई. समय छल होयत। बाहर नीपल दलान पर गाविस माटिक ढेपलऽ कऽ नीचां माटिपर हाथ धराकऽ ' अ. आ. इ. ई.... ' इत्यादि लिखौने रहथि ओ दृश्य हुनका अखनो स्मरण आबि रहल छनि। हिनक मामा ओहि समयमे जवानियहिं पर रहथि, मुदा जेठ बेटा (वशिष्ठ) क जन्म भऽ चुकल रहन्हि। लिखबामे कमलजी सँ जखने कनेको गलती भऽ जाय कि मामा चट् एक थापड़ मारथिन। नानी दौड़ल आबथिन आ हबोढकार भेल बाजथिन- "हौ नै मारहक ओकरा, टुग्गर छै छौंड़ा, एखन कोन जोगरक भेलैअय? "मामा नानी पर तेहनकऽ गुम्हड़थिन जे नानी कात भऽ जाथिन। तखन लाल भैया अबितैथ कहथिन- "पढ़ुआकाका! अहां स्नान करू, भंडार जायमे देरी भऽ जायत हम ता कमलकेँ पढ़ा-लिखा दैत छियैक। "मामा बिहार खादी ग्रामोद्योग संघक कपसिया खादी भंडारमे कार्यरत रहथि। लाल भैया सेहो पढ़बैत एक -आध कनैठी अवश्य लगाबैथि, किन्तु ओ मामा सन भयावह नहि लागथि। कमलजी सोचैत छथि ओलोकनि यदि मारि-पीटिकऽ सोझनहि कयने रहितथि तँ आइ एहिठाम धरि नहि पहुंचल रहितहुं। लाल भैया ओहि समयमे लोहा उच्चविद्यालयमे छठम वा सातम वर्गमे प्रवेश कऽ चुकल रहथि। पढ़ाई मे हुनको कम कष्ट नहि भेल रहनि। माय तेनाने गर्जन तर्जन करथिन जे कयदिन बिना खयनहि कनैत स्कूल चलि जाथि। मैट्रिक पास कयलाक बाद लाल भैया मधुबनी रामकृष्ण महाविद्यालयमे नाम लिखौलनि तथा गामहिसँ मधुबनी जाय आबऽ लागल रहथि। लाल भैया प्रतिदिन सोलह किलोमीटर पैदल चलैत छलाह। ओहुना ओ युग पैदले चलबाक युग छलैक। कतहुसँ कतहु लोक पैदले चलि जाइत छल। लाल भैयाक ओ तपस्या आगां चलि कऽ कमलजीकेँ प्रेरित कयलक। लाल भैया पहिल बेर इन्टरक परीक्षामे अनुतीर्ण भऽ गेल छलाह, किन्तु दोसर बेर उतीर्ण भऽ बिहार पुलिसमे बसौलीक मौसाजीक पैरबी पर (जे स्वयं दरोगा रहथि) जमादारमे भर्ती करा देल गेलाह सेवानिवृत सँ पूर्व लाल भैया इस्पेक्टर भऽ चुकल रहथि।

कमलजीक पढ़ाई क्रमहि प्रारंभ भऽ चुकल छलन्हि। जखन कऽ टऽ कऽ किताब पढ़य लगलाह तँ नानी अहलभोरे उठा दैत छलथिन आँखि पोछि दैत

छलथिन आ डिबिया लग पढ़बाक हेतु बैसा दैत छलथिन कमल झूमि - झूमिकऽ जोर - जोरसँ पढ़य लागथि। किछु दिनक बाद लोहाक अपर प्राइमरी स्कूलमे भर्ती करा देल गेलन्हि ओहि स्कूलमे बहुत दिन भेलो नहि छलन्हि कि कमलजीक बाबूजी कलकत्ता सँ आबि हिनका गाम लऽ गेलाह। दुनू नानी पाँचों-सातो मामा-मामीक बहुत स्नेह भेटैत रहनि। हिनका बाबूजीकें हिनका लऽ जायब सँ सबकेओ रोकैत रहथिन। हिनक बड़का मामा कहने रहथिन- "ओझाजी! कमलकें पढ़ाई छोड़ाकऽ गाम लऽ गेनाइ ठीक नहि रहत। एखन पढ़ाइमे कनेक सुढ़िअयले अछि; अपना संग लऽ जयबैक तँ सबकिछु बिसरि जायत आ नढ़ेर जँका बौआइत रहत। "नहि -नहि से नहि हेतैक। एकर टीपनि (जन्म कुण्डली) एकटा नीक जोतखीसँ देखौलहूँ अछि"। ओ कहलनि - तेहन लग्न-नक्षत्रमे एहि बालकक जन्म भेल अछि जे एकरा जंगलहुमे छोड़ि देबैक तैओ विद्वान आ यशस्वी बनि देश विदेशमे नाम करत। ई जंगलहुमे मंगल करत। "ओझाजी, जखन पढ़हिने देबैक तखन कोना विद्वान भऽ सकत ? पैघ लोक बनबाक लेल मोन लगाकऽ पढ़ाइ करब तँ आवश्यक छैक किने! " किन्तु बाबूजी कमलकेँ लोहासँ गाम लऽ अनलाह। बाबूजी कमलकेँ लघुकौमदी, अमरकोश, दुर्गासप्तशतीक कील, कवच, अर्गला, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, महादुर्गाक ध्यानमन्त्र, रामचरित मानसक बालकाण्ड आदि रटबैत रहलखिन। फेर बाबूजी भैयाकें मौसी लग आ हिनका अपना संग लऽ कलकत्ता आबि गेलाह। कमलजी कलकता मे कालीमंदिरक संगहि अनेक देवी देवताक दर्शन कयलनि। एक दिन आचानक बाबूजीक मोन खराप भऽ गेलनि। बाउ भैया हुनका अस्पताल लऽ गेलथिन। हिनक बाबूजीकें कोनो असाध्य रोग छलनि, जाहिमे आराम भेलाक बादो बहुत दिनधरि परहेज आ आराम विश्रामक आवश्यकता छलनि। अस्पताल सँ छुट्टी भेटलनि तँ बाउ भैया हिनका दुनू गोटेकें गाम लऽ अनलनि। बाबूजी अपन अस्वस्थताकें देखैत दूनु भाइकें उपनयन संस्कार करा देलनि। उपनयन संस्कारक बाद पिताजीक देहान्त भऽ गेलनि। हिनका दूनु भाइक माथ पर सँ माय बापक साया हटि गेलनि। आब ई दुनू भाइ दीन-हीन, मातृ- पितृ विहिन, टुग्गर भऽ चुकल रहथि। अतेक जल्दी हिनक बाबूजी हिनका सभकें छोड़िकऽ चलि जयताह तकर आशंका ककरो नहि छलैक।

बाबूजीक श्राद्धक किछुए दिनक बाद हिनक भैया धमियाँपट्टी आ कमलजी अपन मातृक लोहा पहुँचि गेलाह। हिनका देखि नानी विकलतासँ कानऽ लगलीह। हिनका जे देखय सभहक आँखिमे नोर आबि जाइक तारा दाईकेँ "जा धरि बेटा नहि भेल रहनि ता ओहि लेल उदास रहथि, किन्तु जखन दूटा बेटा भेलनि तँ तकर सुख भोगबाक लेल केओ नहि रहलाह। "ई हिनक बड़की मामीक करुण स्वर छलनि। छोटकी नानी कनैत-कनैत बाजलि रहथि- "एहने ठाम कहलकै- कान तँ सोन नहि सोन तँ कान नहि। " पाँचों-सातो मामा - मामीलोकनि जुटि गेल रहथिन आ शोकाकुल रहथिन्ह। हिनका प्रति सभहक सहानुभूति उमड़ि पड़ल रहनि। आब हिनका पढ़ाई पर मामालोकनि आर अधिक ध्यान देबऽ लगलाह।

हिनक बाल्यकालक अधिकांश समय लोहामे बीतल छल। तें आन टोलक लोककें नहि लगैक जे ई मातृकमे छथि। कमल बाबू लोहाक वासीए जकां लगैत रहथि। मामा (ब्रह्मदेव झा) एवं मझिला मामा (रतिनाथ झा) खादी भंडारमे नौकरी करैत रहथि। मामा कनेक क्रोधी रहथि तँ कतेको खादी भंडारकें देखि चुकल रहथि - कपसीया, मधुबनी, राजनगर, खोपा,रहिका,सिमरी, दरभंगा, शाहपुर, पटोरी, मुजफ्फरपुर, पटना, नवादा आदि। दसकोस धरिक भंडार सबमे मामासँ भेट करबाक आ मामीक संवाद पहुँचयबाक हेतु हिनका पैदले जाय पड़नि। ओ भोरे अन्हरोखे निकलि जाइथ ओतहि भंडारक मेसमे भोजन कऽ मामाक संवाद लऽ लौटि जाइथ तँ मुन्हारि सांझ धरि गाम पर आबि जाइथ। खूब तेजी सँ चलबाक अभ्याससे भऽ गेल रहनि। गामे -गाम सड़क वा एकपेड़िया पर एकसरें निर्भीकतासँ चलैत देखी लोक अपनामे गप्प करय देखही- "ई विद्यार्थी केहन संस्कारी छैक? एकसरे जा रहल छैक,

कोनो डर भय नइ होइछै। प्राय: बाभनक बच्चा छै। "कोनहु गाममे नाम गाम आ गन्तव्य स्थलक पूछि पीठ ठोकि दैनि- वाह बटुक आगां जाकऽ अहां बड़का आदमी बनब। "हिनक मामाके कोनो व्यवस्थापकसँ नहि पटैत रहनि खिसियाहलोक अधिक स्वाभिमानी होइत छैक जे ओकरा ईहो पता नहि रहैत छैक जे कखन ओकर स्वभिमान अपन सीमा कें नांघि अहंकारमे बदलि चुकलैक। विकासक रास्ता खुजैत छैक विनम्रता सँ। अहंकारी वा अज्ञानी लोक कहताह - "हमरा ककरो चमचागिरी करऽ नहि अबैत अछि। सैह छलाह हिनक मामाजी।

डॉ. झाजीक प्रारम्भिक शिक्षा अपन मातृक लोहा गाम मे भेल छलन्हि। अंग्रेज़ी शासन कालमे सन् 1939 ई. मे लोहा उच्च विद्यालयक स्थापना भेल छल।

सन् 1953 ई. मे कमलजी सप्तम वर्ग उत्तीर्ण भऽ अष्टम वर्गमे प्रवेश कऽ गेल छलाह। ओहि समयमे अष्टमेहि वर्गसँ ऐच्छिक विषयक रुपमे किछु नीक छात्र विज्ञान रखैत छलाह।हिनके किछु संगीलोकनि विज्ञान रखलनि, मुदा ई कला विषयक मैथिली, भूगोल आ किदनसब रखलाह। सत्यनारायण दोस्त विज्ञान रखलनि कियैक तँ ओ पैघलोकक बालक छलाह। हुनक बहिनोइ हुनकाहि नामक (श्री सत्यनारायण झा, दुल्लीपट्टी) विज्ञान शिक्षक बनि कऽ आबि गेल रहथिन। हिनका लागल जे विज्ञानक पढ़ाइ खर्चीला होइत छैक, जे हमरासँ संभव नहि भऽ सकत। ओहुना हिनक घरक विविध कार्य करैत रहलाक व्यस्तताक कारण पढबाक पलखति कम भेटैत छलनि। ओहुना बेसी छात्र कला विषयहिमे पढ़ाइ कऽ रहल छल। हिनका लोहा उच्चविधालयमे अष्टम वर्गमे छबो मास नहि पढ़ने हेता कि गामसँ बाउभैयाक (बङका पितियौत भाइ, हिनका पिता अपन जमीन जथा दुनू भाइक बालिक होइत धारिक लेल सुनझा गेल छलथिन) बजाहटि आबि गेल। हुनका कमलजी सन आज्ञाकारी सेवकक आवश्यकता गाम में छलनि, कारण बाल काका (छोटका काका) नौकरी करबाक हेतु विराटनगर चलि गेल छलथिन। दोसर केओ पुरुष -पात नहि छलनि। तें बिना सोचनहि केवल मामीकें कहि ई अपन पैतृक गाम हरिपुर, डीह टोल आबि गेलाह, कारण बाउभैयाक प्रति हिनकालोकनि मे वेश सम्मानक भाव रहैत छल, पितृवत लगैत छलाह। काकीतँ हुलसिकऽ स्नेहाशीर्वाद प्रदान कयलनि। ओहि दिन भौजी सेहो बड़ अहलाद एवं सहानुभूति देखौने छलथिन। जखन कमलजी निश्चिंत भऽ कऽ बैसलाहतँ बाउ भैया अपन योजना सुनौलखिन –" हमर विचार भेल आछि जे अहां गामहि पर रही तथा कलुआही हाइस्कूलमे बिना नाम लिखौनहि ता क्लास करी। स्कूलक सेक्रेटरी भुवनेश्वर झासँ गप्प भऽ गेल अछि। अहांके केओ क्लास करबसँ नहि रोकत। एकहि बेर चारि वर्षक बाद मैट्रिकमे परीक्षा देबाक व्यवस्था भऽ जायत। ता स्कूलक परीक्षासब दैत रहब।हमहू तँ छौ मास वर्ष दिन पर आबितहि रहब। बीच - बीचमे अहां चिट्ठी लिखैत रहब। जखन मातृकहुमे बड़दे चरबैत छी तखन गामाहिमे कियैक ने रहब।

कमलजी सन् 1955 ई. सँ कलुआही विद्यालमे बिना नाम लिखौनहि अष्टम वर्गमे संगीसभक संग बैसऽ लगलाह नाम लिखौला पर प्रतिमास विद्यालयक शुल्क लगैत छल। ओहि समयमे शुल्क नीक लगैत छलैक सरकारीकरणक तँ कल्पनो नहि छलैक। सुगौना (राजनगर) क जगन्नाथ मिश्र प्रधानाध्यापक रहथि, जिनकासँ सचिव भुवनेश्वर झाकें हिनका कारण झगड़ों भऽ गेलनि। शिक्षक लोकनिक कथन छलिन बिना नाम लिखौने बिना वर्ग-शुल्क देने कोनहु विद्यार्थीके वर्गमे कोना बैसाओल जा सकैत अछि। नि:शुल्कता किछु जँ भैयो जेतैक तैयो तँ किछु शुल्क तँ देबहि पड़तैक। सचिव हिनक गामक दक्षिणबारि टोल (गौरीदास टोलीक) रहथि। ओहि टोलक राजकर्ण मिश्र हिनक वर्गक वर्गशिक्षक रहथि। किन्तु शुल्क ओसूली दिन जे कोनो छात्र फीस नहि अनने रहैत छल तकरा वर्गसँ निकालि देल जाइत छलैक। ओहोन स्थितिमे हिनका कोना छोड़ल जाइत ?

प्रत्येक मास वर्गसँ निकालल जाइत रहलाह। लोहामे ओना तँ नहि होइत छल। ई तँ भेल 'चौबे गेला छब्बे बनऽ दुबे कहाकऽ अयलाह'। बाउभैया कलकत्ता

जाकऽ निश्चिंत भऽ गेलाह। कारण हुनक आय सीमित छलनि। ओहिमे गामहुमे पठबैत छलाह आ ओतहु कहुना कार्य चलबैत छलाह। गाम जे टाका पठबथिन ताहिमे सब खर्च पूरा नहि होइन, तखन भैजी हिनक पढ़ाई पर कियैक एकहुटा पाई खर्च करितथि ? छौ मासक बाद अनुभव भेल - " आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास"। 'ने एम्हरकें रहलहुं आने ओमहर के'। आब घूरिकऽ लोहा जाइत लाज होइत छलनि। कारण मामालोकनिक इच्छाक विरुद्ध आवि गेल छलाह। ओलोकनि भिन्ने उपराग दैत छलाह-" जहिना बिलाड़ अपन मोछ देखि लैलापर जंगल पकड़ि लैत अछि तहिना कमल कनेक छेंटगर भेल कि गाम पड़ा गेल।"

गाममे हिनक स्थिति अत्यंत दयनीथ छल, किछु करैत नहि बनैत छल। तथापि धैर्य ओ साहससँ डटल रहलाह। कांपी, कलम, पेन्सिल, लालटेन, किताब आदि सब कथूक अभावे रहैत छलनि, तथापि जेना-तेना समय काटि रहल छलाह। संगीसबसँ किताब मांगिकऽ पढ़ि लैत छलाह।

कमलकान्त झा 1957 ई. मे दशम वर्गमे कलुआही स्कूलमे अत्यंत दयनीय आर्थिक स्थितिसँ संघर्ष करैत दिन काटि रहल छलाह। ओमहर मामालोकनिकें हिनक स्थितिक पता चलि चुकल छलनि। ओ एक दिन संवाद दऽ कऽ बजौने छलाह। निर्णय भेल जे लोहा उच्चविद्यालयमे दशम वर्गमे वार्षिक परीक्षा फीस दऽ कऽ शामिल भऽ एगारहम वर्गमे नाम लिखा लेल जाय। गामक राजदेव बाबू सेहो कलुआहीसँ लोहामे विज्ञान शिक्षक रुपे पहुंचि चुकल रहथि। अपन डीह टोलक प्रधानाध्यापक सहित तीन शिक्षककें देखि हिनका मनोबल बढ़ि गेल छलनि। आवहु शिक्षकलोकनि हिनका पर ध्यान देबऽ लगलाह। यथा-बख्शीटोलक पंडित, सौराठक उमेश बाबू, नूनूजी(लोहा) आदि। मामा हिनका पांच टाका फीस देलनि जाहिसँ एगारहम वर्गमे नामो लिखा गेल। आब (1958 ई. मे) कमलजी विधिवत लोहा उच्च विद्यालयक पुनः छात्र बनि चुकल छलाह। ओहि समयमे माध्यमिक परिक्षा केवल दस वर्षमे नहि एगारहम वर्षमे होइत छलैक। तकराबाद दू वर्ष इन्टर तथा दू वर्ष स्नातक, एवं दू वर्ष स्नातकोत्तर (एम. ए.)। तें स्नातकोत्तरमे फिफ्थ एवं सिकस्थ इयर कहबैत छलैक।

कमलजी सोचैत छलाह जे जाधरि गाममे रहब ता मैट्रिको कऽ सकब तकर लेशमात्रो आशा नहि छलनि। मातृक लोहामे आबि जी- जानसँ पढ़ाइमे लागि गेलाह। नव एसेस्मेंटक कापी सब तैयार कएलाह आ नियमित समयसँ वर्ग करऽ लगलाह। पढ़ाईमे अतेक रमि गेल छलाह जे बेरूपहर (सांझधरि) बड़द चरबैत काल सेहो कोनहु ने कोनहु पोथी हाथमे रहितहिं छलनि। अवसर भेटला पर कलमबागक फेंड पर बैसि वा परती पर छाहरिमे बैसिकऽ किताबमे डूबि जाइत छलाह। परिणामस्वरूप टेस्ट परिक्षामे नीक अंक प्राप्त भऽ गेल रहनि। स्टूड तँ नहि कऽ सकलाह मुदा तेसर चारिम स्थान पर अवश्य आबि गेल रहथि। ताधरि हिनक भैया कलकत्ता मे नीक ट्यूशन करऽ लागल रहथि। माध्यमिक परीक्षाक फर्म भरबाक हेतु ओ राजदेव बाबूक नामसँ पचास टाका पठा देने रहथि। जाहिसँ कमलजीक फर्म भरा गेलनि आ दस टाका बांचियो गेलनि। जाहिमे राजदेव बाबू 'मेहता टेस्ट पेपर' कीनिकऽ आनि देने छलाह। आब हिनका प्रश्नोत्तरबाला गेसपेपर उपलब्ध भऽ गेलाक कारण पढ़ाईमे आर मोन लागि गेलनि। हरिदेवबाबू स्कूलहिपर एक घंटाक लेल ट्यूशन पढ़बैत रहथिन, जाहिमे हिनका निःशुल्क प्रवेश भेटि गेलनि। भूगोलमे हिनका नीक अंक अबैत छल, कारण नक्सा ई नीकँस बनबैत छलाह। एहि प्रकारे 1959 ई. क फरवरी मासमे हिनकर माध्यमिक परीक्षा आबि गेल रहनि। परीक्षा केन्द्र वाट्सन स्कूल छलनि, जकर अधीक्षक पोखरौनीक चन्द्रनाथ मिश्र रहथि। परीक्षा अवधि लेल मामाक संग मधुबनी गेल छलाह। ओ मधुबनीक खादी भंडारमे डेरा रखबा देलनि मात्र एक सप्ताहलेल। भण्डारक मेसमे दुनू साँझ भोजन करथि। नानी चूड़ा - चीनीक मोटरी हिनका पेटीमे धऽ देने रहथिन आ मामा दस टाका थमा देने रहथिन। ओहिसँ परीक्षा अवधिमे कोनो असुविधा नहि भेलनि। हिनका असुविधा आ कष्ट

उठयबाक ततेक अभ्यास भऽ गेल छलनि जे कनेको सुविधा भेटि जानि तँ बुझि पड़नि स्वर्गिक सुख प्राप्त भऽ गेल। परीक्षा जखन समाप्त भऽ गेलनि तँ अंक कतेक आबि सकत तकर हिसाब लगभग लागबऽ लागल रहथि। कखनहु प्रथम श्रेणीक अंक पुरि जाइन, कखनो घटि जाइन। परीक्षा सम्पन्न कऽ जखन लोहा आबि गेल छलाह तँ खेल - धूप एवं गाम - गमायतमे डूबि गेल छलाह। ओहि साल मझिला मामाकबालक दूनुक (मदनजी एवं सुनीलजी) उपनयन छलनि, जकर नोत - पता लऽ कऽ वा विदागरीकलेल पयरे अनेक गाम गेल छलाह। बसौली यात्राक एकटा रोचक प्रसंग अछि। हिनक मझिला मामाक विवाह बसौली छलनि, मौसाजी (दरोगा साहब) क नजदीकी दियादीमे उपनयनक नोत - पता लऽ कऽ गेल छलाह। ओहि साल मौसाजीक पुत्रीसँ हिनक गामक दुखमोचनजीक विवाह भेल छलनि हरिपुरसँ एकटा विधार्थी आयल छथि से सूचना पाबि उक्त बहिनदाइ नुका रहलीह। जखन फड़िछाकऽ कहलथिन जे हरिपुरसँ नहि, एखन हम लोहासँ आयल छी, ओहिठाम उपनयन छैक, तखन बात सबकेओ बुझलनि। हिनका अपन मझिली मामीक बहिनिक सासुर पिलखबाड़ सेहो एकबेर जाय पड़ल रहनि। मामाक सासुर बासोपट्टी आ कण्टिर मामाक सासुर बेलाही तँ ओहि दू - चारि सालमे आधा दर्जनो बेर गेल छलाह। एक - दू बेर नानीक संग हुनक नैहर दामोदरपुर सेहो गेल छलाह।

बाल्यकालमे रंग - विरंगक खेलक लुतुक हिनका छल। शाखामे कबड्डी खूब खेलाइत छलाह। पयर छानबामे ई माहिर रहथि, जाहि कारण ठेहुनमे बड़ चोट लागैत रहन्हि। बेसीकाल ठेहुन फुटले रहैत छलन्हि। शाखा जखन लटपटा गेलन्हि तँ फुटबॉल खेलबाक लत लागि गेलन्हि। प्रत्येक खेलमे बीलट दोस्त हिनका संग छाया बनि कऽ रहैत छलाह। दुनू दोस्त गुड्डी उड़बैत सौराठ बाध धरि चलि जाइत छलाह। हिनक चारिम लत छल माछ मारबाक।

एकबेर सौराठ सभाक समयमे (प्राय: 1953-54 मे) दामोदरपुरक पाहुनसब आयल रहथि। अखाढ़ मासक समय छलैक रातिमे कसिकऽ वर्षा भेलैक हिनका कनेक सबेरगरे पैखाना लागि गेलाक कारण उठिकऽ बाहर अयलाह। तँ देखैत छथि सड़कक उत्तरवरिया डबरी (खत्ता) सँ आगां दक्षिणी चभच्चा दिस पानि बहि रहल छलैक। सड़कहिपर छपर- छपर करैत रंग -विरंगक माछ सबकें देखलाह। आब कमलजी पैखाना दिस गेनाइ बिसरि गेलाह आ माछ पकड़नाइ चालू कऽ देलाह अंडायल टेंगरा, पोठी, कबइ, गरइ आदि सब मिलाकऽ एक डेढ़ सेर माछ पकड़िकऽ फाॅरमे धरनेआङनमे आबि मामी लग उझीलि देलखिन। आ फेर दौड़लाह माछ पकड़बाक हेतु, मुदा ताधरि खेल समाप्त प्रायः छलैक। प्रकाश भऽ चुकल छलैक, झीसी बन्द भऽ गेल छलैक आ पानि बहनाइ बन्द भऽ चुकल छलैक। हिनका माछ पकरबाक उक्त कलासँ पाहुनलोकनि खूब प्रसन्न भेल रहथि। एकटा बूढ़ा (मामाक छोटका मामाक नाम छलनि गांधी झा) हिनक पीठ ढोकि देलनि। माछ पकड़बाक हॉबिक कारण पढ़ाडिमे बहुत बाधा होइत छलन्हि। गामहुपर जखन रहैत छलाह तँ घर लगक दरोगा पोखरि मे भरि-भरि दिन बन्सी खेलाइत रहैत छलाह। बुअरिया, भुनचट्टी, कांटी, सौराढी,कबइ, बुआरी, रोहु आदिमाछ खूब मारैत रहथि।

कमलजीक माध्यमिक परीक्षाक रिजल्ट 1959 ई. मे बहरायल छलनि कम विद्यार्थी रहबाक कारण अखबारमे नाम छपैत छलैक। अखबार नाम पर बिहारमे आर्यावर्त (हिन्दी दैनिक) तथा इण्डियन नेशन (अंग्रेजी दैनिक) पटनासँ छपैत छलैक। आर्यावर्तमे अपन नाम प्रथम श्रेणीमे तकलाह कतहु नहि भेटलनि ;फेर द्वितीय श्रेणीमे अपन नाम देखि सन्तोष भेलनि। कमलकांतजीक मैट्रिक परीक्षाफलसँ टोल भरिक मामा-मामी एवं आनहु लोक मित्र मंडली सबके सुखद आश्चर्य भेल रहनि। कमलजीक भैयाकें कलकत्तामे जखन उक्त समाचार प्राप्त भेलन्हि तँ प्रसन्नता भेलनि। ओ लगले हिनका पत्र लिखलन्हि -" अहांक मैट्रिक रिजल्टसँ अवगत भेलहुं। अपार हर्ष भेल। अध्ययनमे काफी असुविधा छल। तथापि द्वितीय श्रेणी प्राप्त भेल से जानि हम चकित भेलहुं। हमरा आब गुजर करबाक योग्य ट्यूशनसँ आय भऽ जाइत अछि। हम जँ अध्ययन

जारी राखब तँअहांक पढ़ाइ बाधित भऽ जायत। मामा जतबे मदति कयलनि सैह बहुत। ते निर्णय कयलहुं अछि जे अहींकपढ़ाइ जारी रहय। हमरा जें दू वर्ष पछुआ गेल तें एक वर्ष आर सही। हम कॉलेजमे नामांकन हेतु टाका पठा रहल छी। आर. के. कॉलेज मधुबनीमे नाम लिखा लेब। ता किछु दिन लोहासँ पैदले क्लास करब। दुर्गापूजाक छुट्टीमे हम आयब तँ एकटा सैकेण्ड हैण्ड साइकिल कीनि देब। तखन ओहिसँ कॉलेज कयल करब भैयाक पत्र पबितहिं साईकिल सीखि लेबाक चिन्ता सवार भऽ गेलनि। दोस्त (बीलट) कतहुसँ एकटा पुरान साईकिल माँगि अनलनि आ कलम-बागक बिचला परतीपर दुनू गोटे सीखब प्रारंभ कयलाह। ओहि समयमे साइकिले कम्महिं लोककें रहैत छलैक। ओहि समयक वरक विदाई छलनि साइकिल, घड़ी, औंठी आ रेडियो।

मैट्रिक परीक्षा पास कयलाक बाद रामकृष्ण महाविद्यालय मधुबनी मे नामांकन करेलाह। भैयाक पत्र पाबिकऽ साहस बढ़ि गेल छलनि। किछुए वर्ष पूर्व लालभैयाकें पैदल लोहासँ मधुबनी आर. के. कॉलेज करैत देखने छलखिन। तें कमलजीकें साहस सेहो बढ़ि गेलनि। ओ लोहासँ मधुबनी लेल एक घंटा पूर्व पैदल तेजीसँ निकलथि। सोझे दक्षिण मुँह भगवती पोखरीक पछबरिया भीड़ परहक जोलह टोलीक एक पेरिया रास्ता पकड़ि लोहना टोल, कपसिया, सौराठ उत्तरवारी टोल, बिचलाटोल, सभागाछी, मिठौली, जीवछ नदी टपैत जगतपुर होइत आर. के. कॉलेज पहुंचि जाइथ। ततेक तेजीमे चलैथ जे तमाम पैदल यात्रीकें पछुअबैत समय पर अपन क्लासरुम पहुंचि जाइथ। हिनक क्लास कहियो नही छूटैत छल।

ओहिसाल (1959 मे) नव शिक्षा पद्धति लागू भेल छलैक। जखन नाम लिखायल छल तँ प्रथम वर्ष (आइ. ए.) छल। किन्तु तीन मासक बाद प्री - युनिवर्सिटी आर्ट्स (प्राक - कला) लिखऽ लगलाह। प्रायः हायर सैकेण्डरी स्कूल (कोनो-कोनो) ओहि साल प्रारंभ भेल रहैक। अपन संकल्पक अनुसार मैट्रिक घरि कमलजी कोनो फिल्म नही देखने छलाह। केश नहि बनबौने छलाह, कारण ओसब नव फैशन छलैक बूढ़ पुरान सब हसैत छलैक। कमलजी ताधरि जूता-चप्पल सेहो नहि पहिरैत छलाह। स्कूल आबि पयरमे बिना चप्पल पहिरने चलैत छलाह ता खराम पहिरथि। किन्तु आब बिना जूताक कार्य चलब असंभव छल तें एकटा सस्तौआ कपड़ाबला हाफ जूता कीनि लेलाह। खराम पहिरिकऽ दौड़ियो जाइत छलाह। कमलजी पहिल फिल्म 'पैगाम' शंकर टॉकीजमे देखने छलाह। कतोक दिनक बाद दोसर फिल्म ओहि टॉकीजमे 'मुगले आजम' देखने छलाह। मधुबनीक चारि वर्षक पढ़ाइमे मात्र वैह दूटा फिल्म देखने छलाह। हिनक कतोक संगी लोकनि खूब ऐश-मौजमे रहथि, गप्पक छुरुक्का सब छोरथि-"अहां कोन-कोन विषय रखलहुं। "हमतँ भूगोल, नागरिकशास्त्र आ हिन्दी रखलहुं"। अहां कोन-कोन विषय रखलहुं।"हम तँ रखलहुं अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र आ कोकशास्त्र।"एहि पर ठहक्का बजरय। असलमे मैथिलीक कक्षामे आदरणीय रमाकरजी विद्यापतिकें श्रृंगार गीतसब खोइछा छोड़ाकऽ पढ़बैत रहथिन तें मैथिलीकें विद्यार्थी सब कोकशास्त्र कहय। एक बर्ष धरि गामहि सँ मधुबनी जाईत रहलाह दोसर बर्ष में मधुबनीक खादी भंडार मे डेरा भेटलन्हि। तीन बर्ष धरि खादी भंडार मे डेरा राखि लेलन्हि। श्री झा जीक जेठ भाई इन्द्र कान्त झा कलकत्ता मे ट्यूशन करथि आ पचास टाका प्रति मास भेज देथि। जाहि सँ मधुबनीक डेराक ख़र्च निकलि जाइन्हि। ग्रामीण पुस्तकालय सँ बड़ पैघ लगाव रहलैन्ह। 1962 ई. मे इन्द्र कान्त झा यानि कमल बाबूक भैयाक बियाह सौराठ गाम मे भेलन्हि। जाहि बियाह मे एकटा 'सुपर डीलक्स' साईकिल आ एकटा रेडियो दहेजक रुप मे भेटल छलन्हि। जे दूनू उपहार भैया कमल बाबू के दय देलैथ। आब साईकिल सबारी करय लगलाह। आमक गाछ लगेबाक सौख हिनका बचपने सँ छलैन्ह। श्रीमान जीक विवाह 1963 ई. मे जोंकी महिनाथपुर मे ठीक भेलनि। कलकत्ता सँ भैया इन्द्र कान्त झा गाम अयलाह। 27 जून 1963 ई. मे जोंकी महिनाथपुरक राजेन्द्र झा जीक पाँचमपुत्री शैल कुमारी सँ कमलकान्त बाबूक शादी भेलनि। कन्यागत एम. ए. धरिक पढ़ाईक भार गछलैन।

कमलजीक विवाह पर जोंकी भरिमे एकहि बातक चर्चा छलैक मालिक केहन इलटाउ-बिलटाउकेँ उठाकऽ लऽ अनलनि ? वरके ने माय छैक ने बाप छैक। धनो तेनाहे सन। एक भाइ मौसीलग (धमियाँपट्टी) मे पोसिया लागल रहै छलै तँ दोसर नानीलग (लोहा) मे कोना-कोना पढ़लकैए से तँ बुझले अछि;तखन कथीपर मालिक ई काज कऽ लेलनि!' किन्तु मुँह पर सब प्रशंसे करय-"वाह, केहन सुन्दर सुशील छथि ओझाजी! पढ़लाहा आ मूर्खहबामे यैह अन्तर होइत छैक आ ताहूमे नीक गाम ठामक छथि किने ! मालिककेँ सबसँ नीक जमाय यैह भेल छथिन। "किछु दिनक बाद जखन हिनक बी.ए. आनर्सक परीक्षाफल प्रकाशित भेल तँ अखबारमे कमलजीक नाम देखि ससुर महाराज प्रसन्न भऽ उठलाह। अखबार हाथमे लेनहि आङन दौड़ल अयलाह-"देखू यै! ओझाजीक रिजल्ट निकलि गेलनि। हौ खकन, महिनाथपुरसँ एक सेर मिठाई लेने आबह, आइ बड़ी खुशीक बात अछि। प्रताप कतऽ गेलैक ? ककरो जल्दी पठाउ।" भरि आङन प्रसन्नताक लहरि दौड़ि गेल रहनि। जेठि बहिनलोकनि शैलकुमारीक भाग्यक सराहना करऽ लागलि रहथिन।

आब हिनक पढाई चलअ लगलैन्ह। श्रीमान आब चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज मे पढ़य लगलाह। एक साल कानूनक पढाई सेहो पढलैथ। जखन एम. ए. मे नाम लिखेलाह तखन कानूनी पढ़ाई बन्द भय गेलनि। सन 1964 ई. मे एम. ए. फस्ट क्लास मे सेकेंड अंक सँ पास कयलन्हि।

अनेक वर्षसँ विभिन्न भाषा सभक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनक समाचार जखन अखबार सभमे पढ़ैत रही तँ मनमे एक बेदनाक अनुभव होइत छल- की हमर भाषा केर ओहन सम्मेलन नहि भऽ सकैत अछि ? की हमर भाषा भारत- नेपाल दू देशक भाषा रहितहुं अन्तरराष्ट्रीय भाषा नहि थीक ? की एकर प्राचीन एवं समृद्ध साहित्यिक परम्परा कें नूतन सम्मेलनमे आभूषित करक प्रयोजन नहि छैक?

मैथिली अनेक देश- प्रदेशमे बाजल जाइत अछि, लिखल जाइत अछि, लगभग हजार वर्षक समृद्ध साहित्यक परम्परा कायम अछि ; पचासो शोधकर्ता पीएच.डी., डी. लिट. करैत रहैत छथि, तथापि एकटा भारतीय संविधानमे स्थान प्राप्त नहि छैक। जखन घरहिमे महत्त्व नहि तखन बाहर कोना स्वागत हो? घर दही भेटैत छैक तखने बाहरो दही भेटैत छै। किन्तु जे बच्चा कनैत- खौंझाइत नहि अछि, तकरा अपन माइयो दूध पिआयव बिसरि जाइत छैक। प्रयोजन छैक मिथिला-मैथिलीक भयंकर जन आंदोलन ठाढ़ करबाक। प्रयोजन छैक भाषाक आधार पर पृथक मिथिला राज्य प्राप्त करब। किन्तु से हो तँ कोनो हो ? एकरा लेल सम्पूर्ण मैथिली भाषी जनताकें एक सूत्रमे जोड़त के ? यैह सभ विचार मन्थन आ कठिन समस्यामे फँसल कतोक वर्ष सँ हमरालोकनि झखैत रहैत छलहुं आ एक दोसरकें दोषी बुझैत खौंझाइत रहैत छलहुं। मैथिली एक प्राचीन भाषा अछि। एकर एकटा विशाल क्षेत्र अछि। एहिमे रहैवला सभ केओ कोनो ने कोनो रूपे मैथिली बजैत अछि। एहि भाषाक गरिमा आदिकालीन रचनाकार ज्योतिरीश्वर ठाकुर आ मधयकालीन रचनाकार विद्यापति बढौलनि। एहि मैथिली भाषाक अपन अस्तीत्वक लेल बहुत संघर्ष करए पड़ल। 1990 ई.मे बिहार विधान सभाक चुनावक बाद जखन बिहारक मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद यादव बनलाह तँ भोजपुरी भाषा रहबाक कारण तथा किछु जातीय विद्वेषक कारण 1991 ई. कऽ लोकसभा चुनावक तुरंतबाद सर्व प्रथम ओ हमरे लोकनिक माथा हाथ देलनि मुख्यमंत्री बनलाक डेढ़ वर्षक भीतरहिमे ओ तीनटा दुष्टतापूर्ण निर्णय देलनि (1) संस्कृत विद्यालय सभक वेतन भुगतान बन्द कऽ देलनि (2) विश्वविद्यालय शिक्षक प्रोन्नति रदद् कऽ देलनि तथा (3) मैथिली की भाषा अधिकार सबकें छीनि लेलनि, यथा (क) बिहार लोकसभा आयोगक परीक्षा सँ मैथिलीकें निकालि देलनि, (ख) अन्तर स्नातक परीक्षाक अनिवार्य भाषा साहित्यिक सूचीसँ मैथिलीकें निकालि देल गेल तथा (ग) माध्यमिक विद्यालय सँ सेहो निकालबाक षड़यन्त्र प्रारंभ कऽ देल गेल। जातीय द्वेष कारण बिहार सरकार उक्त निर्णय सँ श्री लालूजी समर्थन अनेक मिथिलावासीकें सेहो प्राय:

प्रसन्नता भेलनि। दूनु चुनाव मे मिथिलाक अधिकांश क्षेत्रसँ जनता दलक प्रत्याशी जीतल छलाह, जाहिमे एकहुटा सांसद वा विधायक उक्ति निर्णयक विरोध नहि कयलनि। हमरा तँ लगैत अछि हुनके लोकनिमे किछु गोटे उक्त निर्णय करबाक सलाहो देने होथिन तँ कोनो आश्चर्य नहि। जिनका लोकनिक मस्तिष्कमे इछऽो – पिछड़ीक भावना भरल हो तिनका सँ नीकक आशा करले कि जा सकैत आछि ? उक्त लोकसभा चुनावक तुरत् बाद बिहार सरकार मैथिली विरोधी निर्णयकें लागू कऽ, देलक।

ओतेक पैघ आक्रमण भेलाक बादो, ओहन मार्मिक आधात लगलाक बादो मिथिलाक लोक प्रत्याक्रमण तँ दूर, अगैठीमोड़ सेहो नहि कऽ सकल। जयनगर, मधुबनी, रहिका, दड़िभंगा आदि स्थानमे मैथिलीक छात्रलोकोनि किछु प्रदर्शन अवश्यक कयलनि; श्री वैद्यनाथ चौधरीक नेतृत्वमे विद्यापति सेवा संस्थान दड़िभंगा सेहो किछु प्रदर्शन कयलक, किंतु बिहार सरकार पर कोनो असरि नहि पड़ि सकल।

उक्त चिन्ताजनक स्थितिकें देखैत रांचीक प्रसिद्ध पत्रकार श्री रामएकबाल सिंह 'विनीत' एवं अन्य वन्धुक प्रेरणास्रोत मैथिली आंदोलनमे अप्रैल 1992 सँ जुड़ल डॉ. धनाकर ठाकुर 1993 ई. कऽ रांचीमे प्रथम अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन स्थानीय संस्था भारतीक द्वारा आहूत कयलनि, जाहिमे देश-विदेशस्थ मैथिली संस्था सभक एक केंद्रीय संस्था 'अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषदक' निर्माण कएल गेल, जाहिमाध्यमसँ समय-समय पर अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आयोजित कऽ सभ मैथिली संस्थाकें एक सूत्रमे जोड़ल जा सकल। उद्देश्य ई छल जे केंद्रीय संस्था जखन विभिन्न संस्था सभक माध्यमसँ सुदृढ़ भऽ जायत तँ मिथिला- मैथिली कोनो आंदोलन ठाढ़ करब तथा ओकरा जनान्दोलनक रूप देब सुलभ भऽ सकत। एतदर्थ सताइस मैथिली संस्था मिलि 19-06-1993 ई. क 'अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद' नामक केंद्रीय संस्थाक गठन कय प्रथम अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन रांचीक श्यामली मोहल्लामे (19-20 जून 1993 ई. के अवसर पर) प्रथम सत्रमे भेल। एही सम्मेलनमे एक सुंदर स्मारिका प्रकाशित कयल गेल, जाहि में नेपालक पूर्व प्रधानमंत्री मा. मातृका प्रसाद कोइराला, तात्कालीन नेपालक सूचनामंत्री श्री विजय कुमार गच्छदार, भारतक राष्ट्रपति मा. डॉ. शंकर दयाल शर्मा विश्वहिंदू महासंघक महासचिव डॉ. भोगेन्द झा (काठमाण्डू) भारतक उपराष्ट्रपति के. आर. नारायण, लोकसभा मे विपक्षक नेता श्री लालकृष्ण आडवानी, सांसद श्री भोगेन्द झा, साहित्यिक अकादमीक राजस्थानी भाषाक प्रतिनिधि श्री विजयदान देथा, प्रसिद्ध लेखिका श्रीमति पद्मा सचदेव, डॉ. लक्ष्मण झा, श्री धनिकलाल मंडल, आचार्य सुमनजी,श्री राधानन्द झा, डॉ. जगन्नाथ मिश्र आदिक शुभकामना संदेश छपल छल। अनेक विद्वानलोकनिक गद्य - पद रचनासँ युक्त स्मारिका उच्चस्तरीय रूपमे उतरल छल।

हिनक व्यक्तित्व पर प्रकाश दैत डॉ.धनाकर ठाकुर कहने छथि- " डॉ. कमलकांत झा अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद्क वरिष्ठ उपाध्यक्ष बनक काफी पूर्वहिसँ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक (आ तें समस्त मैथिली विद्वान/अध्यापकक बीच) वरिष्ठ आचार्य छथि"।

छठम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन 26 एवं 27 दिसंबर 1998 मे चेन्नई मे छल। संयोगवश मा.अटलजी देशक प्रधानमंत्री बनि चुकल रहथि। प्रतिनिधि लोकनिक विशेष आग्रहपर मोमबत्ती जरा ओहिपर हाथ राखि हमरा लोकनि संकल्प लेलहुं जे पांच वर्षक भीतर मैथिलीकें संवैधानिक मान्यता दिआकऽ रहब।

छठम अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, चेन्नई मे पारित प्रस्ताव। भारत सरकारसँ :-

मान्यवर प्रधानमंत्री जी, भारत सरकार !

भारत एवं नेपालक चारि करोड़ जनताक मातृभाषा मैथिली अछि, जकर समृद्ध साहित्यिक परम्परा छैक, किन्तु मिथिला क्षेत्र एखनहु गरीब एवं उपेक्षित अछि, तें हमरा लोकनि निम्नलिखित मांगके शीघ्र स्वीकार कयल जाय।

1. भाषाक आधार पर नेपाल सीमा सँ भागलपुर धरि बिहारक बाइस मैथिली भाषी जिलाके मिलाय एक पृथक मिथिला राज्यक गठन कयल जाय।
2. भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिली भाषाकें शीघ्र जोड़ल जाय।
3. सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्रमें नेपाल सीमांतक बड़ी रेल लाइनक जाल ओछा ओकरा जयनगरसँ जनकपुरधाम होइत काठमाण्डू (पशुपतिनाथ धाम) तक पहुंचा देल जाय, जाहिसँ विश्व भरिक हिन्दू समाजक श्रध्दाकेन्द्र नेपालक उक्त दुनू धामक सोझे रेल सम्पर्क दिल्लीसँ भऽ जाय।
4. दूरदर्शन कार्यक्रममे मैथिली भाषा कें सेहो पर्याप्त स्थान देल जाय तथा आकाशवाणी दरभंगा एवं भागलपुर केन्द्रसँ सम्पूर्ण कार्यक्रम मैथिलीक माध्यमसँ प्रसारित हो।

बिहार सरकारसँ :-

माननीया मुख्यमंत्रीजी, बिहार सरकार !

निम्नलिखित माँगकेँ शीघ्र स्वीकार कयल जाय :-

1. बिहारक द्वितीय राजभाषा मैथिलीके बना देल जाय।
2. मैथिली भाषाके बिहार लोकसेवा आयोगक परीक्षामे पुनः एक ऐच्छिक विषयक रुपमे शीघ्र जोड़ल जाय।
3. इण्टर परीक्षामे पुनः अनिवार्य भाषा साहित्यक रुपमे स्थान देल जाय।
4. प्राथमिकसँ विश्वविद्यालय स्तर धरि मैथिलीक पढ़ाईके सुनिश्चित कयल जाय तथा सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्रमे मातृभाषा मैथिलीक माध्यमसँ प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षाक प्रबन्ध कयल जाय। नेपाल सरकारसँ :-

माननीय प्रधानमंत्री जी, श्री 5 सरकार नेपाल !

निम्नलिखित माँगकेँ शीघ्र स्वीकार कयल जाय:-

1. संविधान संशोधन कय मैथिली भाषाके अधिराज्यक द्वितीय राजभाषा घोषित कयल जाय।
2. नेपाल लोक सेवा आयोगमे मैथिलीभाषाकेँ स्थान देल जाय।
3. प्राथमिक सँ विश्वविद्यालय स्तर धरि मैथिलीक पढ़ाईके सुनिश्चित कयल जाय।
4. प्राथमिक ओ माध्यमिक शिक्षा मैथिलीभाषी क्षेत्रमे मातृभाषा मैथिलीक माध्यमसँ दिअयबाक प्रबन्ध कयल जाय, कियैक तँ पूर्वी नेपाल तराइक पचास लाखसँ अधिक जनताक मातृभाषा मैथिली अछि, जे राष्ट्रभाषा नेपाली सँ हो प्राचीन ओ समृद्ध साहित्यिक भाषा अछि तथा जे मल्लकालीन नेपालक राजभाषा रहल अछि।
5. सम्पूर्ण विश्वक हिन्दूसमाजक श्रध्दाकेन्द्र जनकपुर धामकें पर्यटनकेंद्र घोषित कय सब प्ररकारक सुविधा प्रदान कयल जाय तथा रेडियो एवं टी॰ वी॰ केन्द्रक सेहो स्थापना कयल जाय।

डॉ. भुवनेश्वर गुरुमैता(अध्यक्ष), प्रो॰ उमेश कुमार झा 'ललन' (महासचिव), डॉ. धनाकर ठाकुर (प्रवक्ता), डॉ. कमलकांत झा (उपाध्यक्ष) अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद, जयनगर (मधुबनी)

2 जून 2003 ई. कऽ निर्मली रेल महासेतुक (कोशी महासेतुक) शिलान्यास करबाक हेतु प्रधानमन्त्री मा. अटलजी आयल छलाह। ओ ओतहि भाषणक अन्तमे विशाल जनसभाकें संबोधित करैत घोषणा कयलनि-"मिथिला वालों को उनकी भाषा मिलेगी, मैथिली भाषाको संवैधानिक मान्यता मिलेगी"। लाखो लोकक करतल ध्वनिसँ सभा गुंजायमान भऽ उठल छल। दिसंबर 2003 मे जखन संसदक शीतकालीन सत्र प्रारम्भ भेल तँ डॉ. गुरुमैताकें दिल्ली बजाहटि भेल छलनि, किन्तु ओ अधिक अस्वस्थ रहलाक कारण नहि जा सकलाह। दरभंगासँ किछु लोक गेलाह तथा धरनापर बैसि गेलाह। तकर ई अर्थ नही जे वैहलोकनि मैथिलीकें मान्यता दिऔलनि। पचासहु वर्षसँ आन्दोलन चलैत रहलाक कारण मिथिलाक फाइल बेश मोट भऽ चुकल छलैक, जाहिमे सैकड़ो मैथिली संस्था एवं मैथिली सेवी लोकनिक योगदान रहलैक। अन्तमे सफल भेलाह तत्कालीन संघ प्रमुख मा. सुदर्शनजीक सहयोगसँ डॉ. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैताजी, तें हमरालोकनि हुनक ऋणी भेलियनि, 22 दिसंबर 2003 कऽ लोकसभामे गृहमन्त्री मा. लालकृष्ण

आडवाणीजी मैथिली साहित तीन भाषाक संवैधनिक मान्यता के बिल प्रस्तुत कऽ देलनि। यदि मात्र मैथिलीक नाम रखितथि तँ बिहारहिक किछु सांसद विरोधकऽ दितथि,तें मैथिली संगहि अपेक्षाकृत कम साहित्यिक समृद्ध भाषा सन्थाली एवं बोड़ोकें सेहो रखलनि। मा. आडवाणीजी बेश चतुराइसँ बिलकें सर्वसम्मिलिसँ पारित करबा लेलनि। 23 दिसंबरकऽ गृहमन्त्री राज्यसभामे सेहो पारित करा लेलनि। महामहिम राष्ट्रपति महोदय किंचित विलम्ब लगबैत 7 जनवरी 2004 कऽ बिलपर अपन हस्ताक्षर कऽ देलनि तथा 8 जनवरीकऽ भारत सरकार गजट भऽ गेल। तदनुसार ओहि दिनसँ मैथिली भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल भऽ गेल। आब ओकरा स्वत: ओ सब अधिकार भेटि गेलैक, जे आन मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाकें छलैक तें बिहार लोकसेवा आयोगमे सेहो आबि गेल। सर्वोच्च न्यायालयमे लालू सरकारक मैथिली विरोधी याचिका खारिज भऽ गेल।

डॉ. कमलकांत झा मिथिला, मैथिलीक उत्थानक आकांक्षी छलाह सब दिन मिथिला- मैथिली समाज राष्ट्र सेवामे लीन रहलाह। मैथिलीकें संविधानक अष्टम सूचीमे नामांकन लेल कतेको धरना देलनि। मैथिली भाषा आन्दोलनमे शुरुआती समय सँ सक्रिय रहल अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद् के अध्यक्ष कमलकांत झा कहलनि जे मिथिला राज्यक माँग कैल गेल तँ सरकार मैथिली भाषाक मान्यता देलक, अलग राज्यक मान्यताक लेल मिथिलाक समस्त लोक के आगू आबय पड़तनि।

कमलजी 1962 ई. सँ कथा, नाटक, कविता लिखय लगलाह। पहिल नाटक 'घटकैती' लिखलैथ आ अंतिम छबीसम निबंध संग्रह लिखलैथ। ई पोथी स्वर्गवासी भेलाक बाद छपल। एहि तरहे 26 गोट पोथीक रचना केलैथ। 2020 ई. मे गाछ रूसल अछि पर्यावरण परक पोथी पर साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि। दिनांक 30 मई 2024 ई. के सुबह मे हम (अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद के अध्यक्ष श्री नारायण यादव) योग से आयल छलहुँ आ हाथ मुँह धो बैसल छलहुँ आ कि फॉनक घंटी टन-टनायल। फोन रिसिभ कयलहुँ तँ बजलाह जे हम लड्डू झा बजैत छी। कमलकान्त बाबू आब एहि संसार मे नहि रहलाह। दुखद समाचार सुनतहि अचेत भय गेलहुँ। किछु देर तक बेहोश रहलहुँ। किछुऐं देर बाद धैर्य धारण कय, अनेक साहित्यकार लोकनि के एहि दु:खद समाचारक जनतव देलौह। चुकि दाह संस्कार 30 मई 2024 के भय गेल छलैक। तें दिनांक 31 05 2024 के शोक सभाक आयोजन करवाक निर्णय लेलहुँ। सभ साहित्यिक प्रेमी सभ संस्था जेना 'आर्यकुमार पुस्तकालयक सभ सदस्य, ज्योत्स्ना मंडलक सदस्य, बरिष्ठ नागरिक जन कल्याणकारी परिषदक सदस्य सभ चेम्बर्स ऑफ कामर्सक सदस्यगण शहरक आरो गणमान्य लोग सभकें शोकसभा मे भाग लेबाक लेल आमंत्रित केलियैन्ह। प्रोफेसर शिव कुमार झाजीक अध्यक्षता मे शोक सभाक आयोजन भेल। बहुतो संख्या मे गणमान्य व्यक्ति एहि शोक सभा मे भाग लेलैथ। अनेको बक्ता लोकनि डॉ. झा जीक व्यक्तित्व कृतित्वक बखान कयलनि। एहि बखान सँ नव-नव वात प्रकाश मे आयल जे निम्न अछि – डॉ. झाजी के पद्मश्री क उपाधि सेहो भेटबाक संभावना छलैन्ह। एहि निमित्ते प्रो. शिव कुमार झा जनतब देलन्हि जे 2022 ई. मे जखन बीजेपीक सरकार छल। तखन डॉ. झाजीकें डी. बी. कॉलेज सँ सेवानिवृत्त भेला तकरीबन 20 बर्ष भय गेल छलैन्ह। डॉ. झा पद्मश्री कोना भेटैत छै ताहि बातक जानकारी प्रो. शिव कुमार झा सँ केलैन्ह। दूनू श्रीमान जयनगरक शहीद चौक पर अवस्थित बिहारी साइबर पर पहुँचलाह। ओ बिहारी साइबर बाला वेश सँ भेंट केलैन्ह। पद्मश्री कोना भेटैत छै, ताहि बिषय पर साइबर बाला सँ ओकर बेबसाइट खोलबाक आग्रह केलथिन्ह। बिहारी बेबसाइट खोललैन्ह। कम्प्यूटर सँ एकटा प्रपत्र निकालि श्रीमानक हाथ मे देलकन्हि। दूनू प्रो. साहब डेरा पर अयलाह आ साबधानी पूर्वक प्रपत्र के भरलैन्ह। ओहि प्रपत्र मे सत्रहटा बिन्दु छल। सभ बिन्दु के भरि किछु बिशिष्ट ब्यक्ति सँ अग्रसारित करा विभाग के भेजबाक छल। जाहि मे तीनटा बिधायक सेहो छल। बीजेपीक

सरकार छल। किछु बिधायक तँ श्रीमानक शिष्ये छलाह। तीन बिधायक सँ अग्रसारित करा आयकर विभागक कमिश्नर सँ अग्रसारित करेबाक हेतु मुजफ्फरपुर गेलाह। आयकर कमिशनर हिनक आयकर बाला फाइल खोजलैथ। डॉ. झा जी आयकर कहियो जमा नहि कयने छलाह। आयकर कमिशनर आयकर जमा करबाक सलाह देलथिन्ह। बिगत दू साल सँ आयकर जमा कय रहल छलाह। पद्मश्री बाला प्रपत्र बिनु आयकर विभाग सँ अग्रसारित करौने भेजल गेल। एहि मामुली भूलक कारणे एहि प्रपत्र के भारत सरकार निरस्त कय देलकैन्ह। ओहि बातक जानकारी प्रोफेसर शिव कुमार झा जी देलैन्ह। पद्मश्रीसँ ओ वंचित रहि गेलाह। बहुत दिन धरि सँ आर. ऐस. ऐस. क सर संघचालकक प्रमुख पद पर आसीन रहलाह। संघक आदेशक प्रति समर्पित छलाह। ओ प्रशिक्षण दैत छलाह। प्रतिदिन आर. ऐस. ऐस. क शिविर लगबैत छलाह। शाखाक संगी कपिलदेव कुंवर आ श्याम कुमार सिंह जी आओरो सहयोगी सभ छलैन्ह। ओ प्रतिदिन सुबह मे योग करैत रहलाह। योगक कारणे मिला-जुला के निरोगे रहैत छलाह। दिबंगत हुअ काल मे कोनो विशेष कष्ट परिवारक कोनो सदस्य के नहि देलथिन्ह। एकटा वात जरुर छलैन्ह जे हिनक रक्त चाप हरदम बढले रहैत छलैन्ह। जकरा सामान्य रखनाई के मोजर नहि दैत छलथिन्ह। हिनका तामस कहियो नहि होइत छलैन्ह। ओ तामस के पीबी जाइत छलाह। बहुतो संस्था, सँ जुड़ल छलाह, आर्यकुमार पुस्तकालयक उपाध्यक्ष छलाह। एहि पुस्तकालयक अनुमंडल पदाधिकारी पदेन अध्यक्ष होईत छथि। ज्योत्स्ना मंडलक अध्यक्ष, वरिष्ठ नागरिक जनकल्याणकारी परिषदक उपाध्यक्ष, सरस्वती शिशु मंदिरक अध्यक्ष एकर अतिरिक्त आरो संस्थाक प्रधान रहलाह। आर्यकुमार पुस्तकालय पर कतेको वेर कौमुदी महोत्सवक आयोजन कयने छलाह। कौमुदी महोत्सवक सगर राति दीप जरय कार्यक्रम, कवि सम्मेलन, प्रतिभा सम्मान समारोहक आयोजन करोने छलाह। हिनक धर्म पत्नी आ प्रथम पुत्र रमेश झा जी जयनगर सँ बाहर बिनु हमरे (श्री नारायण यादव) नहि जाय देत छलथिन्ह। जतय कतौ साहित्यिक संगोष्ठी होइत छल नारायण बाबू हिनका संगे रहैत छलाह। नारायण बाबू कैं हिनका घर सँ पारिवारिक रिस्ता छल। श्रीमान् डॉ. झाजी नारायण बाबू के किछु कहानी आ कविता लिखवाक हुनर सिखौलन्हि। हिनके योगदान सँ हुनक किछु पोथी सेहो छपल। मास दिन पूर्व कमलजी कहलैन जे हमरा कंदर्पी घाट मे विजय स्तम्भ के देखा दीअ। नारायण बाबूके कंदर्पी घाटक युद्धक विषय गे जनतव छलनि। आ ओ जगहो देखल छलनि। कंदर्पी घाट मे दरभंगाक राजा नरेन्द्र सिह सँ बंगालक राजा अलिवर्दी खाँन के बीच युद्ध भेल छल। युद्धक कारण रहैक जे अलीवर्दी खान दरभंगा महाराजा सँ कर देबाक मांग करथिन्ह। दरभंगा महाराजा टेक्स नहि देबाक प्रण कयने छलाह। तें दूनू राजाक बीच युद्ध भेल छलैक। युद्ध 1753 ई. मे भेल छल। युद्ध मे अलवर्दी खान पराजित भेलाह। दूनू तरफ सँ लाखो सिपाही मारल गेल। युद्ध मे नरेन्द्र सिंह विजयी भेलाह। सैनिकक जनऊ के उतारल गेल। तखन ओकरा तौलल गेल तँ ओकर वजन 72 सेर भेल। ओहि समय मे किलोक चलती नहि छल। नारायण बाबूके ई बात बुझल छल। वरिष्ठ नागरिक जनकल्याणकारी परिषदक निर्णय भेल जे सभ मिथिला हाटक परिभ्रमण करी। मिथिला हाट अररिया संग्राम मे छैक। आदरणीय सांसद संजय झा जीक प्रयासक फल थिक। वरिष्ठ नागरिक जनकल्याण परिषदक निर्णय भेल जे कन्दर्पी घाटक विजय स्तम्भ आ मिथिला हाटक परिभ्रमण करी। हम श्रीमान सँ एहि बातक जनतव देलियैन्ह। ओ 13 मई 2024 के 10 बजे कमला रोड अयलाह। सभ तैयारे रहथ, सभ कियो चारि चकिया गाड़ी सँ मिथिला हाटक भ्रमण करबाक लेल चललाह। नारायण बाबूकैं निर्देश छल जे अहाँ हिनका पर विशेष ध्यान रखबैन्ह। डॉ. झा जी आ सभ महरैल गामक विजय स्तम्भ देखलाह। ओतय सभ कियो फोटो खिचेलाह। तकर बाद ओतय सँ अररिया संग्राम जा कय मिथिला हाटक परिभ्रमण कयलाह। ई जगह अररिया संग्रामक पूर्वी भाग मे सुगरबे धार आ पोलटेकनिक कॉलेजक बगल मे अछि। ओतय एकटा

पैघ पोखैर छैक ओहि पोखरिक चारु महार मे दुकान, होटल एकटा भनसाघर छैक। मिथिलाक संस्कृति आ वस्तु जात सभ आब मिथिला सँ विलुप्त भय रहल अछि। तकरा ई हाट जोगोने अछि। पोखैर मे नौका विहारक व्यवस्था सेहो छैक। डॉ.क्टर झा जी क संग नारायण बाबू दरभंगा मधुबनी राँची, कलकत्ता जनकपुर आदि जगह पर साहित्यिक गोष्टी मे भाग लेबाक हेतु गयलाह। डॉ. कमलकान्त झाक निधन सँ मैथिली जगतक जे क्षति भेल तकर पूर्ति करनाई असम्भव अछि। डॉ. झा जीक पहिल रचना 1965 मे छपल छल 'घटकैती नाटक'। एकर मंचन प्रायः बहुतों गाँव मे भेल छल। दू दर्जन सँ बेसी पोथी प्रकाशित अछि। हिनका प्रकृति पर आधारित पर्यावरण संरक्षण, संवर्द्धन' पोषित पोथी 'गाछ रुसल अछि' पर मैथिली साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2020 मे भेटलन्हि। तत्काल सेहो एकटा पोथी लोकार्पणक लेल तैयार अछि। हिनका विषय मे जे लिखव सूर्य के दीया देखेबाक सदृश्य होयत। मिथिलाक धरोहर एहेन व्यक्तित्व के कोना बिसरल जाय। एहन पैघ साहित्यकार के शत-शत नमन वन्दन अभिनन्दन करैत छी। डॉ. झाजी 11 नवम्बर 1965 ई सँ डी. बी. कॉलेज जयनगर मे व्याख्याता मैथिली विभाग, 21 दिसम्बर 1982 सँ उपाचार्य एवं विभागाध्यक्ष तथा 01 जनवरी 1987 सँ 31 मार्च 2003 तक विश्वविद्यालय प्राचार्य रहलाह। करैत छी अभिनन्दन, दीयो अहाँ आशीष।

अछि हमर शुभकामना, कृति रहत अहाँक लाख वरीस।

उपर्युक्त विश्लेषण ओ विवेचनोपरान्त हमरा ई कहबामे कनेको तारतम्य नहि होइत अछि जे कमलकांत बाबूक व्यक्तित्व मिथिलाक सांस्कृतिक पर्यावरण सँ निर्मित भेल छलन्हि। माय आ पिताक मृत्युक बाद ई टुग्गर भऽ कष्ट सहबाक, संघर्ष करबाक, मातृभाषा ओ मातृभूमिक प्रति प्रेम बच्चहि सँ हिनका मे कूटि - कूटि कऽ भड़ल छलन्हि। हमरा विश्वास अछि जे हिनक ' व्यक्तित्वक पृष्ठभूमि ' पढ़ला सँ मैथिली ज्ञानक क्षेत्र मे अभिवृद्धि होयत।

संदर्भ सूची :

1. स्मृतिक रथ पर - प्रगतिक पथ पर, डॉ. कमलकांत झा, पृ.-5-6.
2. तत्रैव, पृ.-7.
3. तत्रैव,पृ.-7-8.
4. तत्रैव,पृ.-10-12.
5. तत्रैव ,पृ.-14-15.
6. तत्रैव,पृ.-19.
7. तत्रैव ,पृ.-25.
8. तत्रैव ,पृ.-34-35.
9. तत्रैव ,पृ.-35-36.
10. तत्रैव ,पृ.-40-41.
11. तत्रैव ,पृ.-44-45.
12. विकास यात्रा (अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन)– डॉ. कमलकांत झा, पृ.-1.
13. विकास यात्रा (अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन)– डॉ. कमलकांत झा, पृ.-6-9.
14. स्मृतिक रथ पर - प्रगतिक पथ पर, डॉ. कमलकांत झा,पृ.-103-104.
15. विकास यात्रा (अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन) - डॉ. कमलकांत झा, पृ.-64 -66
16. विकास यात्रा (अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन) - डॉ. कमलकांत झा, पृ.-69-70.
17. स्मृतिक रथ पर - प्रगतिक पथ पर, डॉ. कमलकांत झा, पृ.-106-107.
18. मैथिली साहित्यक इतिहास- डॉ. दुर्गा नाथ झा 'श्रीश', भारतीय पुस्तक केंद्र दरभंगा, पृ.-283-284.
19. भविष्णु- रमण कुमार झा, शेखर प्रकाशन पटना, पृ.-149.

•